शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापूर, महाराष्ट्र

दूरशिक्षण केंद्र

बी. ए. भाग–3 : हिंदी
सत्र 5 : पेपर 7 (DSE-E6) और सत्र 6 : पेपर 12 (DSE-E 131)

विधा विशेष का अध्ययन

(शैक्षिक वर्ष 2021-22 से)

Scanned by CamScanner

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर
महाराष्ट्र

दूरशिक्षण केंद्र

सत्र–5 पेपर 7 (DSE- E6)

सत्र–6 पेपर 12 (DSE- E131)

विधा विशेष का अध्ययन

(शैक्षिक वर्ष 2021-22 से)

बी. ए. भाग–3 हिंदी

Scanned by CamScanner

© **कुलसचिव,** शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

प्रथम संस्करण : 2021

बी. ए. भाग 3 (हिंदी : बीजपत्र-7 और 12)

सभी अधिकार विश्वविद्यालय के अधीन। शिवाजी विश्वविद्यालय की अनुमति के बिना किसी भी सामग्री की नकल न करें।

प्रतियाँ : 300

■

प्रकाशक :
डॉ. व्ही. एन. शिंदे
प्रभारी कुलसचिव,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - 416 004.

■

मुद्रक :
श्री. बी. पी. पाटील
अधीक्षक,
शिवाजी विश्वविद्यालय मुद्रणालय,
कोल्हापुर - 416 004.

■

ISBN- 978-93-92887-81-9

★ दूरशिक्षण केंद्र और शिवाजी विश्वविद्यालय की जानकारी निम्नांकित पते पर मिलेगी-
शिवाजी विश्वविद्यालय, विद्यानगर, कोल्हापुर-416 004. (भारत)

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

इकाई	पाठ्यविषय	पृष्ठ
	सत्र-5 पेपर 7 : विधा विशेष का अध्ययन	
1.	कुसुम कुमार का जीवन परिचय, व्यक्तित्व, कृतित्व एवं नाटककार कुसुम कुमार का सामान्य परिचय	1
2.	दिल्ली ऊँचा सुनती है - कथावस्तु एवं शीर्षक की सार्थकता	11
3.	पात्र चरित्र-चित्रण, संवाद, देश-काल वातावरण	28
4.	दिल्ली ऊंचा सुनती है - भाषाशैली, उद्देश्य, अभिनेयता एवं समस्याएँ	46
	सत्र-6 पेपर 12 : विधा विशेष का अध्ययन	
1.	चंद्रकांता का जीवन परिचय, व्यक्तित्व, कृतित्व एवं उपन्यासकार चंद्रकांता का सामान्य परिचय	64
2.	अंतिम साक्ष्य - कथावस्तु एवं शीर्षक की सार्थकता	76
3.	अंतिम साक्ष्य : पात्र या चरित्र-चित्रण तथा संवाद	96
4.	अंतिम साक्ष्य : देश काल तथा वातावरण, भाषा शैली, उद्देश्य एवं समस्याएँ	112

Scanned by CamScanner

	सत्र 5	सत्र 6
★ **प्रो. (डॉ.) एस. बी. बनसोडे** जयसिंगपुर कॉलेज, जयसिंगपुर, ता. शिरोळ, जि. कोल्हापुर	1	-
★ **डॉ. भारत खिलारे** कला वाणिज्य व शास्त्र महाविद्यालय, पुसेगांव, ता. खटाव, जि. सातारा	2	-
★ **डॉ. प्रकाश कांबळे** महावीर महाविद्यालय, कोल्हापूर	3	-
★ **डॉ. वसुंधरा उदयसिंह जाध** म. ह. शिंदे महाविद्यालय, तिसंगी, ता. गगनबावडा, जि. कोल्हापुर	4	-
★ **श्रीमती सुपर्णा संसुद्धी** जयसिंगपुर कॉलेज, जयसिंगपुर, ता. शिरोळ, जि. कोल्हापुर	-	1
★ **प्रो. (डॉ.) एकनाथ एस. पाटील** राधानगरी महाविद्यालय, राधानगरी, ता. राधानगरी, जि. कोल्हापुर	-	2
★ **डॉ. दीपक रामा तुपे** विवेकानंद महाविद्यालय, ताराबाई पार्क, कोल्हापुर	-	3
★ **डॉ. संजय ब. देसाई** कर्मवीर हिरे महाविद्यालय, गारगोटी	-	4

■ सम्पादक ■

प्रो. (डॉ.) एकनाथ एस. पाटील
राधानगरी महाविद्यालय, राधानगरी, ता. राधानगरी,
जि. कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) एस. बी. बनसोडे
जयसिंगपुर कॉलेज, जयसिंगपुर, ता. शिरोळ,
जि. कोल्हापुर

Scanned by CamScanner

इकाई 3

अंतिम साक्ष्य : पात्र या चरित्र–चित्रण तथा संवाद

अनुक्रम

3.1 उद्देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 विषय – विवरण

3.3.1 अंतिम साक्ष्य : मुख्य पात्र

3.3.2 अंतिम साथ्य : गौण पात्र

3.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

3.5 पारिभाषिक शब्द–शब्दार्थ

3.6 स्वयं – अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

3.7 सारांश

3.8 स्वाध्याय

3.9 क्षेत्रीय कार्य

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

Scanned by CamScanner

3.1 उद्देश्य :

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप-

- उपन्यास में चित्रित मुख्य पात्र और गौण पात्रों से परिचित हो जाएँगे।
- पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं से अवगत हो जाएँगे।
- उपन्यास के संवाद से परिचित हो जाएँगे।
- उपन्यास में चित्रित पात्रों की मनोदशा से अवगत हो जाएँगे।

3.2 प्रस्तावना :

उपन्यास तत्त्वों में कथावस्तु के बाद चरित्र-चित्रण एवं संवाद दो तत्त्व महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं। रचनाकार अपने पात्रों का चरित्र-चित्रण अनेक प्रकार से करता है। उपन्यास-कथा प्रस्तुतीकरण एक कला है, जिसमें आरंभ, विकास, संघर्ष, चरमसीमा और अंत होता है। इसमें पात्रों को खड़ा करना सबसे बड़ी चुनौती होती है। संवादों के उतार-चढ़ाव के अनुसार पात्रों की विशेषताएँ सामने आती हैं, जो पात्रों को स्थापित कर देती है। रचनाकार चरित्र-चित्रण के माध्यम से समस्त पात्रों का विवरण पाठकों के समक्ष सजीव बना देता है। दरअसल पात्र जीवन के सुख-दुःख संवादों के माध्यम से ही प्रकट होते हैं। रचनाकार पात्रों के द्वारा पाठकों के हृदय में जितनी उथल-पुथल पैदा करते हैं उतनी ही प्रबलता के साथ हमारी संवेदना जागृत होती है। पात्रों की बुनावट उपन्यास में सफलता के साथ हो जाती है तो ही उपन्यास सफल बन जाता है। चरित्र-चित्रण से पात्रों के मनोभाव, अच्छाई-बुराई और गुण-दोष का वर्णन होता है। वस्तुत: उपन्यास के पात्रों के क्रिया-कलाप द्वारा ही पात्र के गुण-दोष स्पष्ट हो जाते हैं। पात्रों के गुण-अवगुण संवादों के माध्यम से स्पष्ट हो जाते हैं। उपन्यास में पात्र या चरित्र-चित्रण एवं संवादों की भूमिका अहम् होती है। चंद्रकांता लिखित 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास में पात्र या चरित्र-चित्रण तथा संवादों की बुनावट सफलता के साथ हो चुकी है; जिसका विवेचन-विश्लेषण निम्नलिखित रूप से प्रस्तुत है-

3.3 विषय विवरण :

प्रस्तुत उपन्यास में मुख्य पात्र के रूप में मीना, बाऊ जी और गौण पात्र के रूप में बीजी, विकी, जगन, चाची आदि पात्रों का चरित्रांकन हुआ है।

3.3.1 अंतिम साक्ष्य : मुख्य पात्र :

3.3.1.1 मीना :

मीना चंद्रकांता लिखित 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास की केंद्रीय पात्र है, पूरी कथा मीना के इर्द-गिर्द घूमती है। मीना अनाथ बालिका और मजबूर जीवन जीने वाली परित्यकता नारी के रूप में 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास में चित्रित हुई है। साथ ही मीना नारकीय जीवन से छूटकारा पाने वाली आत्मनिर्भर नारी, लोकप्रिय गायिका तथा संपूर्ण प्रेमिका के रूप में भी चित्रित हो चुकी है; जिसका विवेचन-विश्लेषण निम्न लिखित रूप से प्रस्तुत है-

Scanned by CamScanner

• **अनाथ बालिका :**

मीना जब छोटी थी तब उसकी माँ गुजर जाती है। तब उसकी जिम्मेदारी उसके पिता पर आ जाती है। मगर जब मीना की उम्र स्टापू खेलने की थी तब पिताजी उसे अकेला छोड़कर चल बसे। यही से मीना के अनाथ जीवन की विडंबना शुरू हो जाती है। उसके चाचा उसे अपने घर ले जाते हैं, मगर मीना को देखते ही चाची गुस्सा हो जाती है- 'उठा लाए क्या परेशानियों की कमी थी?' निष्ठुर चाची अनाथ मीना का खयाल नहीं रखती। अनाथ होने की वजह से ही चाची मीना पर अत्याचार करती है। बारह साल की अनाथ मीना चाची को बोझ लगने लगती है। अनाथ होने की वजह से ही मीना जीवन भर थपेड़े खाती रही। जब बूढ़े लाल उसे छोड़ देता है तभी वह अनाथ होने की वजह से फिर से अपने चाचा-चाची के पास रहने जाती है। चाचा-चाची जो फैसला मीना को लेकर करते हैं वही वह स्वीकार करती है। इसका मुख्य कारण मीना का अनाथ होना है।

• **मजबूर नारी :**

अनाथ मीना चाचा-चाची पर निर्भर थी। इसी वजह से वह चाची का हर फैसला स्वीकार करने के लिए मजबूर है। वह बारह साल की मीना की शादी पचास साल के बूढ़े रंडुवे लाला से करा देती है। शादी के बाद लाला को पता चला है कि पोती समान मीना की सुरक्षा वह अपने बेटों से नहीं कर पाएगा और वे मीना को माँ के रूप में भी स्वीकार नहीं करेंगे। इसलिए वह उसे चाची के पास वापस लौटा देता है। चाची इस बात को सामाजिक अपमान समझकर बूढ़े लाला की जीवन की जमापूँजी पाच हजार रुपए लेकर मीना को वापस लेती है। यहाँ भी मीना चाची के पास वापस आने के लिए विवश है। उसके बाद चाची मीना की शादी आवारा-लंपट जगन से करा देती है, पर मीना शादी करने और जगन के अत्याचार सहने के लिए विवश है। जगन उसे उपभोग की वस्तु मानता है और उपभोग लेने के बाद वह दोस्त मदन के हाथों कोठेवाली को बेच देता है। यहाँ पर मीना बेची जाने के लिए मजबूर है। संगीत मास्टर को वह छोड़ना नहीं चाहती, मगर संगीत शिक्षक की मजबूरी देखकर वह उसे छोड़ने के लिए मजबूर बन जाती है। आखिरकार बाऊ जी के प्रेम में फंसकर आखिर तक प्रेमिका या रखेल बनकर रहने में भी वह मजबूर है।

• **परित्यक्ता नारी :**

चाची मीना की शादी पचास साल के बूढ़े रंडुवे लाला से करा देती है, मगर लाला के बेटे उसे गिद्ध नजर से देखते हैं। बूढ़े लाला अपने बेटे से मीना की सुरक्षा नहीं कर पाएगा इसलिए वे मीना को चाची के पास वापस लौटा देते हैं। चाची उसे सामाजिक अपमान समझती है। तब बूढ़े लाला अपने जीवन की जमापूँजी पाच हजार रुपए देकर मीना की वापसी करा देता है। चाची सौदेबाजी कर मीना को वापस स्वीकार करती है और उसका लांछन मीना के चरित्र पर लगा देती है। तब मीना चाची के पास रहने के लिए मजबूर हो जाती है, मगर वह परित्यक्ता नारी बनकर रह जाती है।

• **नारकीय जीवन से छूटकारा :**

चाची मीना की दूसरी शादी आवारा-लंपट जगन के साथ करा देती है। मुशटंडे जगन से शादी कराकर चाची अपना पल्ला झाड़ देती है, मगर मीना जगन के अत्याचार से तंग आ जाती है। जगन मीना को भोग की

Scanned by CamScanner

वस्तु समझकर भोगता है और उपभोग लेने के बाद वह ब्याहता पत्नी मीना को धन के लालच में दलाल मदन सिंह के हाथों एक कोठे वाली को बेच देता है। कोठे की मालकिन मीना को एक संगीत मास्टर के पास संगीत सीखाने के लिए भेज देती है। संगीत शिक्षा प्राप्त करते समय मीना भावात्मक रूप से संगीत शिक्षक के साथ जुड़ जाती है। संगीत शिक्षक भला आदमी था। मीना के जीवन में वह देवदूत बनकर आया था। वह उसे गाना-बजाना सीखा देता है और इस लोलुपता के बाजार से बाहर निकालता है। इतना ही नहीं; वह उसे रेडियो आर्टिस्ट बना देता है। रेडियो पर नौकरी दिलाकर और कैलाश के घर में किराये पर कमरा दिलवाकर वह विदा हो जाता है। इस प्रकार संगीत मास्टर मीना को नारकीय जीवन से छूटकारा देता है।

• लोकप्रिय गायिका :

जब जगन धन के लालच में दोस्त मदन सिंह के हाथों मीना को एक कोठे वाली से बेच देता है। कोठे की मालकिन उसे एक संगीत मास्टर के पास संगीत सीखाने के लिए भेज देती है। वह उससे अच्छी संगीत की शिक्षा प्राप्त करती है जिसके कारण वह लोकप्रिय गायिका बन जाती है। लोकप्रिय गायिका होने की वजह से ही उसे रेडियो पर संगीत आर्टिस्ट के रूप में नौकरी मिल जाती है। सुरेश की मँगनी में मीना को सब गीत गाने का अनुग्रह करते हैं और बाऊ जी भी ग़ज़ल सुनाने के आदी है। मीना के दर्दभरे गीत बाऊजी को अंदर से हिला देते हैं। मीना का गायन सुनकर बाऊ जी मीना की ओर आकर्षित हो जाते हैं। इस प्रकार मीना एक लोकप्रिय गायिका है।

• संपूर्ण प्रेमिका :

मीना बाऊ जी की संपूर्ण प्रेमिका बनकर रह जाती है। मीना मकान मालकिन कैलाश और रमेश के परिवार के माध्यम से बाऊ जी के परिवार से जुड़ जाती है। सुरेश की मंगनी में कैलाश और रमेश के साथ आई मीना के दर्दभरे गीत से बाऊ जी उसकी ओर आकर्षित हो जाते हैं। मीना का दुःख और अकेलापन बाऊ जी को आकर्षित करता जाता है। बाऊ जी के सुखी एवं संपन्न परिवार में मीना को सहानुभूति मिल जाती है। बाऊ जी और मीना के प्रेम के बारे में बीजी को तब पता चलता है जब वह विकी को सूट का कपड़ा खरीदने के लिए मीना मौसी को साथ ले जाना चाहती थी इसलिए वह मीना के कमरे में पहुँच जाती है। तब से बीजी बाऊ जी के प्यार से कट जाती है और मीना के प्रति बाऊ जी का प्रेम निरंतर बढ़ता जाता है। मीना और बाऊ जी का प्रेम शारीरिक संबंध तक पहुँच जाता है। दरअसल बाऊ जी के जीवन में मीना का आगमन ही बीजी के मृत्यु का कारण बन जाता है। बीजी की मृत्यु के तेरहवें दिन ही वे मीना को घर ले आते हैं। माँ की मृत्यु के बाद बाऊ जी के दोनों बेटे घर छोड़ देते हैं मगर मीना बाऊ जी का अंत तक साथ नहीं छोड़ती। इसके पीछे कारण मीना का बाऊ जी के प्रति होने वाला प्रेम ही था। मीना चाहती तो बीजी के गुजर जाने के बाद पत्नी का सम्मान पा सकती थी, मगर अंत तक वह बाऊ जी या प्रतापसिंह की प्रेमिका बनकर ही रहना पसंद करती है। स्पष्ट है कि बीजी बाऊ जी की पत्नी नहीं बल्कि संपूर्ण प्रेमिका है।

• आत्मनिर्भर नारी :

चाची मीना की दूसरी शादी जगन के साथ करा देती है। आवारा-लंपट जगन धन के लालच में दोस्त मदन सिंह के हाथों मीना को एक कोठे वाली को बेच देता है। कोठे की मालकिन मीना को एक संगीत मास्टर

Scanned by CamScanner

के पास संगीत सीखाने के लिए भेजती है। संगीत की शिक्षा प्राप्त कर वह एक लोकप्रिय गायिका बन जाती है। रेडियो पर संगीत आर्टिस्ट के रूप में नौकरी करती है। वह कैलाश और रमेश के पास किराये पर कमरा लेकर रहती है, मगर चाची के पास वापस नहीं आती। इस प्रकार मीना एक लोकप्रिय गायिका और आत्मनिर्भर नारी है।

सार यह कि मीना शुरुआत में अनाथ बालिका है। उसके बाद दिए धोखे से वह वह शादीशुदा बन जाती है, वह परित्यक्ता बन जाती है। उसके बाद वह दुबारा शादीशुदा बन जाती है और पति जगन उसे बेचकर वेश्या बना देता है। संगीत मास्टर की मदद से वह लोकप्रिय गायिका बन जाती है। रेडियो पर नौकरी पाकर वह आत्मनिर्भर नारी बन जाती है। वह बाऊ जी की प्रेमिका बनकर बीजी की मृत्यु का कारण बन जाती है। बीजी की मृत्यु के बाद वह बाऊ जी के परिवार का हिस्सा बन जाती है, मगर आखिर तक वह प्रेमिका यानी रखैल बनकर ही रह जाती है। यदि वह दिल से न सोचकर दिमाग से सोचती तो वह फिर से पत्नी का सम्मान पा जाती मगर वह आखिर तक संपूर्ण प्रेमिका बनकर ही रहना पसंद करती है और अपने प्रेमी प्रताप सिंह यानी बाऊ जी का अंत तक साथ देती है।

3.3.1.2 बाऊ जी ऊर्फ प्रतापसिंह :

बाऊजी ऊर्फ प्रतापसिंह 'अंतिम साक्ष्य'उपन्यास के नायक है। वे बीजी के पति है और सुरेश तथा विकी के पिताजी है और मीना से प्रेम करनेवाले प्रेमी है बाऊजी एक प्रतिष्ठित व्यक्ति यानी इज्जतदार इन्सान है। अपने पत्नी से अपार प्रेम करने वाले बाऊ जी पेशे से ठेकेदार है। उनके व्यक्तित्व में निम्नलिखित विशेषताएँ पाई जाती है–

- **ईमानदार पति और जिम्मेदार पिता :**

बाऊ जी ईमानदार पति और जिम्मेदार पिता है। वे अपनी पत्नी को देशी नाम से पुकारते थे। दिनभर की थकान वे पत्नी को देखकर भूल जाते हैं। शुरुआती दिनों में वे अपनी पत्नी से ईमानदार पति के रूप में सामने आते हैं। वे दोस्तों की महफिलों में ताश के साथ शराब–कबाब के दौरे करते थे मगर अपने बच्चों की जिम्मेदारियाँ बढ़ते ही उसे कम कर देते हैं। वे अपने बच्चों को होशियार समझते हैं। खूब पढ़ाना चाहते हैं और एक को आर्मी ऑफिसर और दूसरे को चीफ इंजीनियर बनाना चाहते थे। वे अपने दोनों बेटों के जरिए जीवन की महक को मुट्ठी में लिए सुखद भविष्य की कामना करते हैं। शांत–सौम्य मनस्थिति में घंटों बैठकर खुले आसमान के नीचे अपने सपनों के ताने–बाने बुनते रहते हैं। वे अपने दोनों बेटों के खुशहाल तथा सुरक्षित भविष्य की कामना करते हैं। बाऊ जी शिकार के शौकिन थे।

- **मेहनती :**

बाऊ जी एक मेहनती इन्सान है। सुखद भविष्य के लिए वे कड़कती धूप में दिन भर सड़कों पर खड़े–खड़े मजदूरों से चख–चख करते हैं, काट्रैक्टरों–इजीनियरों की समस्याओं में सिर खपाते हैं और पसीने से तर–बतर होकर घर वापस लौटते हैं। पत्नी को देखकर वे दिन भर की थकान भूल जाते हैं। अपने परीवार के खुशहाल सुरक्षित भविष्य के लिए दिनभर मेहनत करते रहते हैं।

Scanned by CamScanner

• **मीना मौसी के प्रति गहरा आकर्षण :**

बाऊ जी और बीजी के बेटे सुरेश की मंगनी में कैलाश और रमेश के साथ उनकी किरायेदार मीना भी बाऊ जी के घर आ जाती है। मीना रेडियो आर्टिस्ट है। मीना को सब गीत गाने का अनुनय करते हैं और बाऊ जी भी ग़ज़ल सुनाने की इच्छा प्रकट करते हैं। मीना के दर्दभरे गीत बाऊ जी को आकर्षित करते हैं। मीना का दुःख और अकेलापन सुनकर वे मीना की ओर अधिक ही आकर्षित हो जाते हैं। इस आकर्षण का पता बीजी को तब चलता है जब वह विकी को सूट खरीदने मीना मौसी के कमरे में पहुँच जाती है। मीना मौसी के प्रति बाऊ जी का यह आकर्षण निरंतर बढ़ता ही जाता है। इसी कारण बीजी की मृत्यु के तेरहवें दिन ही वे मीना मौसी को घर ले आते हैं। इस अनहोनी घटना के बाद दोनों बेटे बाऊ जी का घर छोड़ देते हैं, मगर मीना मौसी हर हाल में बाऊ जी का साथ नहीं छोड़ती जबकि अंत तक वह उनके साथ रहती है। इस प्रकार बाऊ जी मीना मौसी के प्रति आकर्षित थे।

• **रंगीन मिजाज :**

मीना मौसी के आगमन से बाऊ जी का रंगीन मिजाज शुरू हो जाता है। वे बंधना न चाहकर भी अनायास ही मीना मौसी के प्यार में बंध जाते हैं। नारी नाम की जादूई छड़ी से आकर्षित होना बाऊ जी की जबरदस्त कमजोरी थी। मीना मौसी के प्यार ने बीजी के प्यार का आसन हिला दिया और बाऊ जी के जीवन में अनायास ही मीना मौसी का आगमन हो गया। पत्नी द्वारा घर-गृहस्थी का सबकुछ मिलने के बावजूद बाऊ जी के भीतर का कोई कोना खाली था, जो मीना मौसी के संपर्क में आते ही भर गया। भीतर के खालीपन से त्रस्त बाऊ जी मीना मौसी को उस नितांत वैयक्तिक कोने में समेटते गए। बीजी विकी को जब सूट खरीदने जा रही थी। रास्ते में उसे मीना मौसी का खयाल आया। माँ-बेटे मीना मौसी के कमरे में पहुँचे तो वे देखते है कि अंदर बाऊ जी पलंग पर लेटे थे और मीना मौसी उनका माथा सहला रही थी। इससे बाऊ जी का रंगीन मिजाज सामने आता है।

• **महत्त्वाकांक्षी :**

बाऊ जी बहुत महत्त्वाकांक्षी इन्सान थे। उनकी महत्त्वाकांक्षा अपने काम के प्रति थी। उनकी महत्त्वाकांक्षा अपनी प्रेमिका मीना के प्रेम के प्रति थी। प्रेम की खातिर ही बाऊ जी की पत्नी बीजी गुजर जाती है। इसके बावजूद बाऊ जी अपना प्रेम का आकर्षण नहीं छोड़ते। उनकी महत्त्वाकांक्षा के आगे बीजी गुजर जाती है। बीजी के जोने के बाद दोनों बेटे घर त्याग देते हैं, मगर बाऊजी अपनी महत्त्वाकांक्षा नहीं छोड़ते। वे घर में मीना के साथ ही रहने लगते हैं। बिना शादी किए वे मीना को बीजी के मरने के तेरहवें दिन ही घर लाते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि बाऊ जी बहुत महत्त्वाकांक्षी इन्सान थे और वे घर में अपनी ही चलाते थे।

• **संगीत प्रेमी :**

बाऊ जी संगीत प्रेमी व्यक्ति है। उन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से मीना मौसी को ग़ज़ल गाने की फरमाईश की थी। मीना मौसी की ग़ज़लों से ही वे ताड़ लेते हैं कि मीना के सीने में कोई कसक है। संगीत के रसिया होने के

Scanned by CamScanner

कारण ही प्रताप औरतों के बीच आकर जम जाते हैं। मीना का दर्दीला स्वर तथा संगीत की ऊँची-ऊँची लहरियाँ वे मंत्र-विद्ध होकर सुनते रहें। उनका अतिरिक्त उत्साह मीना की ओर मोहाविष्ट करता रहा। रात के अंधेरे को चीरता मीना का दर्दभरा स्वर उनके दिलों में हूक भरता रहा, जिससे वे सो न सके। वे मीना के दर्दीले स्वर को अपने सीने के भीतर महसूसते रहें। इस प्रकार प्रताप संगीत प्रेमी थे।

- **संवेदनशील व्यक्ति :**

बाऊ जी एक संवेदनशील इन्सान है। मीना के घर से वे बिना खाना खाए घर लौट जाते थे क्योंकि कहा करते थे कि देशी राह देखती होगी। मीना और बाऊ जी के नाजायज संबंध का पता जब बीजी को चल जाता है उसी दिन से वे हररोज शाम घर जल्दी आने लगे, शांत रहने लगे। पत्नी की मृत्यु के बाद तेरहवें दिन वे मीना को घर ले आते हैं मगर वे उसे पत्नी का सम्मान नहीं दे पाते क्योंकि वे एक संवेदनशील व्यक्ति थे। उनकी संवेदना अपनी पत्नी बीजी से गहराई के साथ जुड़ी हुई थी।

सार यह कि बाऊ जी सूझबूझ से काम लेने वाले दूरदर्शी व्यक्ति थे। वे शिकार के शौकीन व्यक्ति थे। भावनाओं के वश में होकर वे मीना से प्रेम करने लगते है। उन्होंने पत्नी और बच्चों के साथ धोखा देने का साहस किया; जिसमें वे अपनी पत्नी को खो बैठे। बाऊ जी मीना मौसी से प्रेम करते रहें जो उन्हें बीजी से न मिलता रहा। वे प्रेमिका और पत्नी के बीच उलझते रहे। उनके जीवन की सूझबूझ, समझदारी मीना के प्रेम के आगे छोटी पड़ गई। बीजी के जाने के बाद परिवार बना रहे इसलिए वे मीना मौसी को घर लाते हैं, मगर लाख चाहने पर भी वे परिवार को जोड़ न सके। विकी और सुरेश घर छोड़कर चले गए। बाऊ जी का परिवार मीना मौसी के आगमन से दरकता गया, जो आखरी तक जुड़ नहीं पाया। संक्षेप में बाऊ जी एक ईमानदार पति और जिम्मेदार पिता, मेहनती, महत्त्वाकांक्षी, संवेदनशील और संगीत प्रेमी व्यक्ति है जो मीना मौसी के प्रति काफी आकर्षित थे। रंगीन मिजाज के बाऊ जी आखिरकार अपने दरकते परिवार को बचाने में असफल रहे दिखाई देते हैं।

3.3.2 अंतिम साक्ष्य : गौण पात्र :

3.3.2.1 बिजी :

चंद्रकांता लिखित 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास की बीजी प्रतापसिंह ऊर्फ बाऊ जी की पत्नी है। वह सुरेश और विकी की माँ है। बीजी उन भारतीय महिलाओं का प्रतिनिधित्व करती है, जो अधिकांश समय अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियाँ संभालने में बिताती है। अन्य महिलाओं की तरह वह आसपास के घरों में अपना समय नहीं गँवाती। बीजी कोमल दिल की सहनशील नारी है। वह ऊँची आवाज तक सह नहीं पाती। पति, घर और बच्चे ही बीजी की दुनिया है। गृहिणी, पत्नी और माँ की लक्ष्मण रेखाओं को वह कभी नहीं लाँघती। घर, परिवार और बच्चों की छोटी-मोटी जरूरतें पूरी करना और हँसी-मनुहार में संतुष्टि मानना ही बीजी की खासियत है। वह एक निष्ठावान कामकाजी औरत है, जो अपने काम से काम रखती है। दिन भर वह अकेली खटती रहती है। मध्यवर्गीय शील-संस्कारों से भरीपूरी नारी बीजी बहुत ही महत्त्वाकांक्षी नारी नहीं है।

Scanned by CamScanner

बीजी बहन कैलाश दवारा किरायेदार मीना की दर्दभरी कहानी सुनकर व्यथीत हो जाती है। बीजी के आदेश पर ही विकी-सुरेश मीना को 'मीना मौसी' कहते हैं। वह अपने पति प्रताप से मीना के बारे में संवेदना प्रकट करती है, मगर एक दिन जब विकी के लिए सूट का कपड़ा खरीदने जा रही थी तब वह मीना को भी साथ लेकर चलना चाहती थी। इसलिए वह मीना के कमरे पर जाती है तब वह देखती है कि 'भीतर बाऊ जी पलंग पर लेटे थे और मीना मौसी अपने शरीर के तमाम अवरणों से बेखबर जाने किस भावाकाश में उड़ाने भर रही थीं।' बीजी को देखकर मीना हड़बड़ाकर उठ खड़ी हो गई। इन दोनों के प्रेम संबंधों का पता बीजी को तुरंत चल जाता है। प्रतापसिंह पर उसका कोई असर नहीं हुआ, बल्कि वे बीजी को ही डांटते हैं-'क्या जासूसी करने आई थी?' वह अपने पति से कुछ बोल नहीं पाती, मगर मीना से जरूर कहती है कि 'उम्रभर का जहर तूने मेरे लिए ही संजो रखा था सर्पिणी।' इस घटना के बाद बीजी और बाऊ जी का संवाद ही खत्म हो जाता है। बेटा विकी दोनों के बीच पुल बांधने का प्रयास जरूर करता है, मगर बीजी का मन मीना और प्रतापसिंह के प्रेम संबंधों को स्वीकार नहीं करता। परिणामी बीजी हमेशा दुःखी रहने लगती है। उसे महसूस हुआ कि उसका अपना आदमी उसके अस्तित्व को नकार रहा है। अपने को महत्त्वपूर्ण समझने वाली बीजी, घर की चक्की में चाक की तरह घूमती बीजी को इन दुर्भाग्यभरे दिनों में लगा कि वह एकदम फालतू हो गई है। बीजी पर हुए मानसिक आघात के कारण उसका प्रेरणास्रोत अचानक सूख जाता है। दरअसल बीजी मीना और बाऊ जी के नाजायज संबंध का पता चलने पर वह जीवन से हार जाती है। उसका मामूली बुखार असाध्य तपेदीक बीमारी में तब्दील हो जाता है। उसकी जीने की इच्छा मर जाती है। प्रताप और मीना का विश्वासघात वह सह नहीं पाती। पराजय की पराकाष्टा हो जाती है। परिणामी वह अंदर ही अंदर घुटकर रह जाती है और अंततः शरीर भी उसका साथ छोड़ देता है। इस घटना से बीजी का घर उजड़ जाता है। बीजी के जाने के बाद सुरेश और विकी घर छोड़ देते हैं। पश्चातापदग्ध बाऊ जी इस बीच गुजर जाते हैं। बाऊ जी के मकान को घर बनाने का काम बीजी ने ही किया था, मगर उसके जाने के बाद उनका घर, घर नहीं रह पाता जबकि बिखर जाता है, दरकता जाता है। बीजी का घर बिक जाता है और सामान नीलाम हो जाता है। बीजी की तड़प ही उपन्यास में अंतिम साक्ष्य बनकर रह जाती है।

3.3.2.2 विकी :

'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास के गौण पात्र में विकी एक महत्त्वपूर्ण पात्र है। बाऊजी की मृत्यू के बाद सुरेश का घर न आने का निर्णय मायूसी भरे अपने घर में विकी कुछ सोचता हुआ नजर आता है तथा बीजी के न होने के कारण घर की दुर्दशा तथा बीजी के रहते घर की सुव्यवस्था आदि घटनाक्रम को विकी मूक दर्शक बनकर भोक्ता हुआ पूरे उपन्यास में उपस्थित है। विकी बीजी और प्रताप का बेटा है। वह अपनी माँ बिजी से बहुत प्यार करता है। विकी जब छोटा था तब उसके बालमन पर टूटते पारिवारिक घटनाओं का आघात होता है। दरअसल विकी बहुत ही संवेदनशील लड़का है। अपने माता-पिता का बहुत खयाल रखता है। वह माँ के सुख-दुःख का साथी है, पिता प्रतापसिंह का लाड़ला बेटा है और अपने माता-पिता का आज्ञाकारी बेटा है। विकी अपनी पढ़ाई-लिखाई की ओर ध्यान देता है और अपनी बड़े भाई सुरेश की आवारागर्दी पर रोक लगा देता है।

Scanned by CamScanner

तनु के प्रति विकी के मन में संवेदना के तार जुड़ जाते हैं, मगर उस पर कोई आंच आए, ऐसी कोई हरकत वह नहीं करता। हर हाल में वह अपनी माँ का साथ नहीं छोड़ता। बीजी की मृत्यु के बाद घर त्यागकर दिल्ली के एक कॉलेज में नौकरी करता है जहाँ उसकी मुलाकात मिस नीला सिंह से हो जाती है। कुछ ही दिनों में वह सिंह परिवार का सदस्य बन जाता है। बाऊ जी के मृत्यु के बाद विकी घरबार बेचकर सदा के लिए दिल्ली चला जाता है।

3.3.2.3 जगन :

जगन 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास का गौण पात्र है। जगन मीना का दूसरा पति है। बूढ़े लाला से मीना की शादी टूट जाती है। उसके बाद चाची मीना की शादी आवारा-लंपट जगन से करा देती है। जगन का शरीर मुशटंडे जैसा है। हर-दम एक तुर्श खुरदुरा भाव जगन के भयानक चेहरे पर मढ़ा रहता था। वह एठी हुई तीखी मूछे रखता है। चौक पर छोले उबालकर बेचने का व्यवसाय करता है, जिसमें पत्नी मीना उसका साथ देती है। वह मीना के साथ अमानवीय व्यवहार करता है। वह मीना को उपभोग की वस्तु मानता है। इसी कारण वह उसका उपभोग लेने के बाद ब्याहता पत्नी मीना को धन के लालच में मदन सिंह के हाथों एक कोठेवाली को बेच देता है। जैसा स्वभाव जगन का है वैसी ही उसकी सोच है। दरअसल वह सोचता है कि वह कब तक गरीबी में जीवन बिताएगा, इसलिए वह मीना को बेच देता है। मीना को लोलुपता के बाजार में धकेलनेवाला कोई और नहीं जगन ही था। वह इतना बीभत्स था कि शाम होते ही मीना अनाम दहशत से घिरने लगती थी। मीना को याद भी नहीं कि उसने कभी उससे मुस्कराकर बात की होगी। उसका प्यार करने का ढंग बहुत ही कठोर था। जगन पर नशे का खुमार रात भर बना रहे, सुबह तक खर्राटे भरता रहे और उसे अकेला ही रहने दे, इसलिए वह भगवान से प्रार्थना किया करती थी ताकि उसके दुखते तन-मन को राहत मिले। इस तरह जगन की दहशत मीना को हमेशा बनी रहती थी।

3.3.2.4 चाची :

चंद्रकांता कृत 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास में मीना की चाची गौण पात्र है। चाची अपने घर में चाचा की एक चलने नहीं देती बल्कि परिवार की सारी बागड़ोर संभालती है। वह झूठी औरत है। बूढ़े लाला से शादी कराते समय मीना की उम्र बीस साल बता देती है। वह बारह साल की मीना को बोझ समझकर उसकी शादी पचास साल के रंडुवे लाला से कराती है। जब वे पहली बार मीना का मुँह देखते हैं तब उसे अपने पोती की याद आती है। लाला के बेटे उसे माँ के रूप में स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है। पोती समान उम्र की मीना पर जब अपने बेटों की गिद्ध दृष्टि पड़ती है तब लाला उसे वापस लौटा देता है, मगर इस बात को चाची सामाजिक अपमान मानती है और लाला के साथ सौदे पर उतर आती है। यह सौदा वह पांच हजार रुपयों में तय करती है, मगर इसका लांछन मीना के चरित्र पर लगा देती है। फिर चाची मीना की शादी आवारा-लंपट जगन से करा देती है। असल में चाची के कारण ही मीना जीवनभर थपेड़े खाती रही। सार यह कि मीना की चाची हृदयहीन, निष्ठुर और मीना के साथ अमानवीय व्यवहार करने वाली औरत है।

Scanned by CamScanner

3.3.2.5 सूरेश :

'अंतिम साक्ष' में सूरेश गौण पात्र के रूप में सामने आता है। प्रतापसिंह का बडा बेटा है वह। बहुत लाड-प्यार से वह बिगड गया है। बचपन से ही आवारा, चंचल, बेधडक और लडकियों के पीछे भागनेवाला है। आवारा गर्दी, मारपीठ और लडकियों को घुमाना उसका शौक है। सूरेश बाऊजी की तरह लंबा-चौडा और हट्टा-कट्टा नौजवान है। बचपन में वह पंडित की बीवी को नहाते हुए देखता रहता है। मर्यादा की सारी हदे वह पार करता है। अपने सरल-सीधे भाई विकी को वह चिढाता है। रातभर वह 'लवमशीन', 'डोलबेबी' जैसी पत्रिका पढता है। पिता की तरह रंगेल सूरेश नशापान भी करता रहता है। कॉलेज में वह मारपीट करता रहता है। कई साल कॉलेज में इन्टर की पढाई करता है। प्रतापसिंह के मीना मौसी के संबंधों के जानकर वह और बिगडेल बन घर में ही लडकियाँ लाता है। सूरेश के इस बिगडैल आचरण को देख बाऊजी उसका खर्चा पानी बंद कर देते है। अपनी चुगली करनेवाले प्रो. गुप्ता पर चाकू चलाता है। बाऊजी पर बंदूक तान देता है। बचपन से ही वह निडर है। उसके आवारा गर्दी से तंग आकर उसकी मंगनी टूट जाती है तो वह दीवान की बेटी मीना को भगा ले जाता है। बाऊजी के अलमारी से रुपये चुरा ले जाता है। जब रुपया खत्म हो जाता है और फाकाक्शी की नौबत आती है तो मीना उसे छोडकर चली जाती है। अंत में अपने मित्र की सलाह मानकर सूरेश फौज में भर्ती हो जाता है। बाऊजी की मृत्यु के बाद घर नहीं आता और विकी को घर की जिम्मेदारी संभालने कहता है।

इसके अलावा बीजी की मुँहबोली बहन कैलाश, कैलाश का पति रमेश, कोठे की मालकिन, संगीत मास्टर, मीना का चाचा, विकी की पहली प्रेमिका तनु, दूसरी मिंस नीला सिंह, कोठे का दलाल मदन सिंह आदि का भी गौण पात्र के रूप में चरित्र-चित्रण हो चुका है।

- **संवाद या कथोपकथन :**

पात्रों के पारस्पारिक वार्तालाप को संवाद या कथोपकथन कहा जाता है। संवाद के कारण उपन्यास में वास्तविकता का आभास होता है। संवाद ही पात्रों के चरित्रों का उद्‌घाटन करते हैं, कथानक को गति देते हैं, समाज विशेष की प्रवृत्ति पर प्रकाश डालते हैं, वातावरण की सृष्टि करते हैं और उपन्यास में सजीवता ला देते हैं। विचार एवं भावों की अभिव्यक्ति के लिए संवाद बड़े कारगर सिद्‌ध होते हैं। संवादों के कारण ही घटनाओं की कार्य-कारण श्रृंखला का बोध होता है। संवादों से ही पात्रों की बौद्‌धिक और मानसिक स्थिति का आभास पाठकों को किया जा सकता है। संवाद से ही पात्रों की संवेदना, क्रिया-प्रतिक्रिया, स्थलकाल की अनुकूलता-प्रतिकूलता के संकेत मिल जाते हैं। संवाद पात्रों के व्यक्तित्व को उजागर करते हैं, सार्थकता एवं स्वाभाविकता ला देते हैं, भावात्मकता एवं विचारात्मकता को बनाए रखते हैं। उपन्यास में संवादों के कारण ही सजीवता आ जाती है। चंद्रकांता लिखित 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास में संवाद उक्त स्थितियों के कारण ही आए हुए हैं। हालाँकि प्रस्तुत उपन्यास के संवाद प्रासंगानुकूल एवं पात्रानुकूल है जो वास्तविकता का आभास देते हैं। प्रस्तुत उपन्यास के संवाद कहीं-कहीं लंबे-लंबे तो कुछ-कुछ स्थानों पर संक्षिप्त बन पड़े है तो कुछ कुछ स्थानों पर बोझिल हो चुके हैं। लेकिन एक बात संवादों में अवश्य नजर आती है वह है रोचकता। इस संदर्भ में जगन और मीनू के संवाद उपन्यास में रोचक बन पड़े हैं। जगन जब मीनू को अपने दोस्त मदनसिंह की मदद से लोलुपता के बाजार

Scanned by CamScanner

में धकेलना चाहता है उस दिन वह सुबह जल्दी उठता है, नहा-धोकर तैयार हो जाता है। तब मीना और जगन के संवाद रोचक बने हुए हैं- ''मीनू हड़बड़ाकर उठी 'सब खैर तो है?'

जगन मुसकराकर बोला, 'आज मदनसिंह के घर जाना है। मेरा पुराना यार है। कल ही बाजार में मिला। बाम्बे में फिल्म कंपनी में काम करता है। चलो, तुम भी तैयार हो जाओ।

'मैं? मैं क्या करूँगी जाकर? मैं तो उसे जानती भी नहीं।'

'कैसी जानोगी?' वह इधर थोड़े रहता है? साल-भर बाद आया है। आज कई दोस्तों को पार्टी दी है।'' (चंद्रकांता, अंतिम साक्ष्य, पृष्ठ -18) उक्त संवादों से विदित होता है कि जगन अपनी जरूरत पूरी होने के बाद मीनू को धोखे से दलाल मदन सिंह को बेच देता है। पार्टी जाने का झांसा देकर उसे लोलुपता के बाजार में धकेल देता है। इसी कारण उपरोक्त संवाद रोचक, धूर्त एवं जिज्ञासावर्धक बने हुए है।

बीजी की मृत्यु के बाद बाऊ जी को अनिद्रा का रोग लग जाता है। वे रात भर जागते रहते थे, करवटे बदलते रहते थे। मीना और बाऊ जी के संवादों से दुःख और दर्दभरा माहौल उपन्यास में चित्रित हुआ है। बीजी के जाने के बाद बाऊ जी दोस्तों की महफिलें छोड़ देते हैं, दफ्तर जाते हैं और सीधे घर लौट आते हैं। वे सभी नाते-रिश्तेदारों से कटे-कटे रह जाते हैं, अपने आप में खोये-खोये से रहते हैं। रोजमर्रा के कामों को पूरा करने में मीना मौसी उन्हें साथ देती रहती है। बाऊ जी हमेशा चुप-चुप रहते हैं। कभी-कभी आधी रात वक्त-बेवक्त उठकर मीना को जगा देते हैं थे तब उनके संवादों से बेचैनी झलकती है; जैसे -

''सो गई क्या?'

मीना मौसी हल्की आहट से उठ बैठती-

'नहीं तो! पानी लाऊँ?'

'नहीं, पानी-वानी-कुछ न चाहिए। अगर नींद न आती हो तो...।'

'नहीं आती है, कहो?'

'वह ग़ज़ल सुना दोगी? तुम्हारे गले से अच्छी लगती है।' बाऊ जी गुनगुनाने लगते, ''खत्म होकर रहेगा सफर ही तो है, खम-ब-खम ही सही, रहे गुजर ही तो है।' मीना मौसी रुंधे गले से बाऊ जी का साथ देती। आँखों में पानी छलक आता, तो बाऊ जी के सीने पर टिकाकर भीतर फूटती रुलाई को होठ काटकर रोक लेती।'' (चंद्रकांता, अंतिम साक्ष्य, पृष्ठ-47) उक्त सार्थक संवाद प्रसंगानुरुप और वातावरण की आवश्यकतानुरुप उपन्यास में प्रयुक्त हो चुके हैं। बाऊ जी और मीना की दर्दभरी ग़ज़ल के संवादों से दुःख के प्रसंग की अभिव्यक्ति हो चुकी है।

बाऊ जी अपने एक बेटे को आर्मी ऑफिसर बनाना चाहते हैं और दूसरे को चीफ इंजीनियर बनाना चाहते हैं। यही बात वे अपनी पत्नी बीजी को बताना चाहते हैं जो प्यार से उसे देशी कहते हैं। बीजी लड़ाइयों की डर की वजह से अपने बेटे को आर्मी में भेजना नहीं चाहती। तब बाऊ जी हंसकर बीजी को समझाते हैं, उस समय

Scanned by CamScanner

आत्मालाप करते संवाद लंबे-लंबे हो जाते हैं- ''लड़ाइयाँ क्या हमेशा होती हैं देशी? अगर हों भी तो मुल्क के लिए मरने वाला शहीद कहलाता है। मैं तुम्हें अखबार के समाचार इसीलिए तो सुनाता हूँ कि तू दिल जरा बड़ा कर। वियतनाम में जिन माँओं के लाल काम आए, वे इतिहास में अमर हो गए।''अपने चौड़े सीने पर हाथ फेरकर वे चमकती आँखों से जैसे आत्मालाप करते- 'राजपूत के बेटे न लड़ेंगे, तो क्या ब्राह्मण-बनिये लड़ेंगे?' बीजी सोच में पड़ जाती। बाऊ जी का गर्व-भरा स्वर उनमें आतंक-सा जगाता 'मेरे बेटे हैं। ठाकुर प्रतापसिंह के बेटे। क्लर्की-मास्टरी करने के लिए पैदा नहीं हुए।'' (चंद्रकांता- अंतिम साक्ष्य, पृष्ठ-42) उक्त संवादों में बाऊ जी का क्षत्रियों होने का अहं तथा आत्मालाप स्पष्ट झलकता है। यहाँ लेखिका बीजी की मन की बातें स्पष्ट कर देती है। उत्तर में बाऊ जी के आत्मालापी संवादों से अपने बेटे की होशियारी और गर्व प्रकट होती है।

कैलाश और रमेश मीना को घूमने के लिए ले जाते तब प्रस्तुत उपन्यास के संवाद काफी जिज्ञासावर्धक एवं कौतुहलवर्धक बने हुए हैं। डेढ़-दो मील चलने के बाद मीना के पैर दर्द करने लगे हैं तब रमेश भाई बहला-फुसलाकर उसे आगे खींचते ही जा रहे थे-'आहा! वह देखो क्या ठंडी हवाएँ चल रही हैं। अरे भई, तुम तो गुम्मट तक चलते-चलते ही थक गई। ऐसी नाजुक तो हमारी कैलाश भी नहीं रही।'

'हटो, मैं कभी नाजुक रही भी?' कैलाश ने रमेश को मीठा-सा झिड़क दिया। उलाहना भी शायद, 'थोड़ी-बहुत नजाकत जो थी भी पहले, तुम्हारे घर आते ही वह चूल्हे में झोंक दी।'

'चूल्हे में गई या बावड़ी में, सो तो मैं नहीं जानता; पर थे बड़े नखरे तुम्हारे।'

'क्या खामख्वाह झूठ बोलकर अपना ईमान खराब कर रहे हो? एक भी नखरे की बात की हो तो बता दो?' कैलाश ने अल्टीमेटम दिया।

'बता दूँ?'

'बिलकुल।'

'इजाजत?'

'हाँ-हाँ बोलो न। बोलोगे क्या, कोई बात भी हो?'

'अब देखा भई, तुम्हारी यह नई सहेली जी है, इनके सामने बोल दूँ तो कहोगी, पोल खोल रहा हूँ और तुम जानती हो, मैं तुम्हें नाराज नहीं करना चाहता। अपनी वाली तो एक ही है न?'

'हटो, ज्यादा मक्खन मत लगाओ। बात ही कुछ नहीं, तो क्या कहोगे?'

'अजी क्यों नहीं है बात? वह जब नयी-नयी घर में आई थीं, क्या बिहारी की नायिका लग रही थीं। वह घड़ी के पेण्डुलम की तरह हवा के झोंके से, हिलने लगती थीं। मैं तो खिड़कियाँ-दरवाजे बंद कर रखता था। कहीं जोर की हवा चली, तो हुजूर गश खाकर गिर न पड़ें और आप कह रही हैं, कोई नजाकत न थी।'' (चंद्रकांता, अंतिम साक्ष्य, पृष्ठ - 24-25) कैलाश और रमेश के उक्त संवाद जिज्ञासावर्धक, प्रेमियों की

Scanned by CamScanner

नोकझोंक और कौतुहलवर्धक बने हुए हैं, जो उपन्यास में प्रसंगानुरुप प्रयुक्त हो चुके हैं। उक्त संवादों में संक्षिप्तता, रोचकता और जिज्ञासा अंत तक बनी हुई है।

सार यह कि 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास के संवाद पात्रानुकूल, प्रासंगानुकूल, संक्षिप्त, वास्तविकता का आभास पैदा करने वाले, कहीं-कहीं पर लंबे-लंबे तो कहीं-कहीं बोझिल बने हुए हैं, लेकिन संवादों में रोचकता, जिज्ञासा और कौतुहलवर्धकता अवश्य दिखाई देती है।

3.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न :

1) बाऊ जी का नाम ..... है।

क) विकी ख) रमेश ग) प्रताप घ) सुरेश

2) मीना की पहली शादी उम्र के ..... साल में हुई थी।

क) 12 ख) 13 ग) 14 घ) 15

3) मीना की पहली शादी ..... के साथ होती है।

क) जगन ख) बूढ़े लाला ग) प्रताप घ) विकी

4) तेरी किस्मत अच्छी थी कि ..... ब्याह के लिए राजी हो गया।

क) विकी ख) बूढ़े लाला ग) प्रताप घ) जगन

5) बूढ़े लाला ने चाची को ..... हजार रुपए दिए।

क) चार ख) छह ग) पाच घ) सात

6) विकी ..... से प्रेम करता है।

क) मिस सिंह ख) मीना ग) चाची घ) कैलाश

7) जगन ने मीना को ..... के हाथों बेचा।

क) बूढ़े लाला ख) प्रताप सिंह ग) मदन सिंह घ) रमेश

8) बाऊ जी के बीमार होने की खबर विकी को ..... देती है।

क) कैलाश ख) तनु ग) नीला घ) मीना

9) सुरेश और विकी के पिता का नाम ..... है।

क) प्रताप ग) लाला ग) मदन घ) जगन

10) कैलाश के पति का नाम ..... है।

क) प्रताप ग) रमेश ग) मदन घ) जगन

Scanned by CamScanner

11) कैलाश मीना को ..... की मँगनी में ले जाती है।

क) प्रताप ग) रमेश ग) सुरेश घ) विकी

12) छोटी उम्र में दुःख का भरपूर स्वाद ..... ने चखा था।

क) कैलाश ख) बीजी ग) नीला घ) मीना

13) मास्टर मीना को ..... में नौकरी दिलाता है।

क) दूरदर्शन ख) रेडियो ग) समाचार पत्र घ) कोठे

14) कैलाश ने मीना को ..... के परिवार से मिलाया।

क) कैलाश ख) बीजी ग) नीला घ) मीना

15) सुरेश ..... में नौकरी करता है।

क) पुलिस ख) कॉलेज ग) कंपनी घ) फौज

16) ..... के आदेश पर विकी-सुरेश मीना को 'मीना-मौसी' कहने लगे।

क) कैलाश ख) बीजी ग) नीला घ) मीना

17) कैलाश और रमेश के बेटे का नाम ..... है।

क) मिट्ठू ख) सुरेश ग) विकी घ) जगन

3.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ :

1) शहतीर - बड़ा और लंबा लट्ठा।

2) अन्यमनस्क - जिसका चित्त कहीं ओर हो, अनमना।

3) शऊर - तरीका, ढंग, सामान्य योग्यता या लियाक़त, विवेक, बुद्धि।

4) मुंडेर - मुँडेरा, खेत की मेंड़।

5) मजलिस - बैठने की जगह, सभा, जलसा।

6) ऊलजलूल -ऊटपटांग, अंड बंड, विसंगत, बेवकूफ, अशिष्ट।

7) वितृष्णा - तृष्णा का अभाव, विकट तृष्णा।

8) जहन्नुम - नरक।

3.6 स्वयं - अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1) ग) प्रताप, 2) क) 12, 3) ख) बूढ़े लाला, 4) घ) जगन, 5) ग) पाच, 6) क) मिस सिंह, 7) ग) मदन सिंह, 8) घ) मीना, 9) क) प्रताप, 10) ग) रमेश, 11) ग) सुरेश, 12) घ) मीना, 13) ख) रेडियो, 14) ख) बीजी, 15) घ) फौज, 16) ख) बीजी, 18) क) मिट्ठू।

Scanned by CamScanner

3.7 सारांश :

१. चंद्रकांता लिखित 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास में मुख्य पात्र के रूप में नायक प्रताप सिंह, नायिका मीना और गौण पात्र के रूप में बीजी, विकी, जगन, चाची आदि का चरित्र-चित्रण हुआ है।

२. विवेच्य उपन्यास की नायिका मीना अनाथ बालिका, शादीशुदा, परित्यक्ता, वेश्या, लोकप्रिय गायिका, रखैल, सच्ची प्रेमिका और आत्मनिर्भर नारी के रूप में पाठकों के सामने आती है। बीजी की मृत्यु के बाद वह बाऊ जी के परिवार का हिस्सा बन जाती है मगर आखिर तक वह प्रेमिका यानी रखैल बनकर ही रह जाती है। यदि वह दिल से न सोचकर दिमाग से सोचती तो वह फिर से पत्नी का सम्मान पा जाती, मगर वह आखिर तक संपूर्ण प्रेमिका बनकर अपने प्रेमी प्रताप सिंह का साथ देती है।

३. प्रस्तुत उपन्यास के नायक बाऊ जी ऊर्फ प्रतापसिंह सूझ-बूझ से काम लेने वाले दूरदर्शी, हमेशा कर्तव्य के प्रति सजग, ईमानदार पति, जिम्मेदार पिता, इज्जतदार इन्सान, मेहनती, महत्त्वाकांक्षी, संवेदनशील और संगीत प्रेमी व्यक्ति है जो मीना मौसी के प्रति काफी आकर्षित प्रेमी के रूप में चित्रित हैं। रंगीन मिजाज के बाऊ जी आखिरकार अपने दरकते परिवार को न बचा सके।

४. उपन्यास में गौण पात्र के रूप में बाऊ जी का बेटा सुरेश, बीजी की मुँहबोली बहन कैलाश, कैलाश का पति रमेश, कोठे की मालकिन, संगीत मास्टर, मीना का चाचा, विकी की पहली प्रेमिका तनु, दूसरी मिंस नीला सिंह, कोठे का दलाल मदन सिंह आदि का चरित्र-चित्रण हो चुका है।

५. 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास के संवाद पात्रानुकूल, प्रासंगानुकूल, संक्षिप्त, वास्तविकता का आभास पैदा करने वाले, कहीं-कहीं लंबे-लंबे तो कहीं-कहीं बोझिल बन पड़े हैं। इसके अलावा संवादों में रोचकता, जिज्ञासा और कौतुहलवर्धकता अवश्य दिखाई देती है।

3.8 स्वाध्याय :

- **दीर्घोत्तरी प्रश्न-**

1) मीना का चरित्र-चित्रण कीजिए।

2) बाऊ जी की चरित्रगत विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।

3) बीजी का चरित्र-चित्रण कीजिए।

4) अंतिम साक्ष्य उपन्यास के संवादों पर प्रकाश डालिए।

- **लघुत्तरी प्रश्न-**

1) विकी की चरित्रगत विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

2) जगन का चरित्र-चित्रण कीजिए।

Scanned by CamScanner

3) चाची के गुण-दोषों को रेखांकित कीजिए।

3.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) मीना जैसी अपने आसपास के नारी पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।

2) भारतीय संस्कृति का प्रतीक बीजी जैसी नारी की चरित्रगत विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।

3.9 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1. अंतिम साक्ष्य – चंद्रकांता, अमन प्रकाशन, कानपुर।
2. चंद्रकांता कथा – साहित्य : समकालीन परिवेश तथा संदर्भ – डॉ. अमोल कासार, विद्या प्रकाशन, कानपुर।
3. चंद्रकांता कथा – साहित्य – डॉ. जगदीश चव्हाण, विद्या प्रकाशन, कानपुर।
4. चन्द्रकान्ता संपूर्ण साहित्य का अनुशीलन– डॉ. ममता रावत, विनय प्रकाशन, कानपुर।

●●●

Scanned by CamScanner